Teacher name - Suraj Kumar

College name - Shakuntalam Institute of Teacher Education Sasaram Rohtas (Bihar)

Paper - C4

Unit - 03 [B.Ed 1st year 2019-2021]

Date - 09/06/2020

Topic - साहित्य का भाषा में योगदान

साहित्य का भाषा में योगदान

* साहित्य क्या है ?

किसी विषय की सम्पूर्ण एवं विस्तृत जानकारी तथा लेखन साहित्य कहलाता है ।

पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – "ज्ञान राशि के संचित कोश का नाम ही साहित्य है ।"

बाह्य हेनरी हडसन के अनुसार – "साहित्य मूलतः भाषा के माध्यम द्वारा जीवन की अभिव्यक्ति है ।"

भाषा के साहित्य में शब्द और अर्थ के बीच सामान्य संबंध नहीं होता बल्कि कलात्मक संबंध होता है । किसी भी भाषा का साहित्य अपने समय और समाज का आइना होता है । वह उसकी सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है । उसमें जनता की भावनाओं

Scanned with CamScanner

और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति होती है।

साहित्य को उद्देश्य के आधार पर तीन भागों में बाँटा जा सकता है —

(i) सूचनात्मक साहित्य
(ii) विवेचनात्मक साहित्य
(iii) रचनात्मक या सृजनात्मक साहित्य

(i) सूचनात्मक साहित्य :-

इसके अंतर्गत आने वाले रचनाओं से नई - नई बातों की जानकारी मिलती है।

जैसे - विश्व कोश, शब्द कोश, संदर्भ ग्रंथ आदि

(ii) विवेचनात्मक साहित्य :-

इस प्रकार की रचनाओं को पढ़कर हमारे अंदर और अधिक जानने की शिक्षा पैदा होती है क्योंकि इनमें किसी विषय पर तार्किक ढंग से और कार्य कारण संबंधता को दर्शाते हुए चीजों को स्पष्ट किया जाता है।

जैसे - दर्शन, विज्ञान और गणित की पुस्तकें आदि

इन दोनों प्रकार के साहित्य को और सृजनात्मक या सौंदर्यात्मक साहित्य भी कहा जाता है। इसमें मुख्यत: सूचना प्राप्त करने, तथ्य याद करने एवं समस्या का हल ढूंढने पर बल होता है।

Scanned with CamScanner

(iii) **रचनात्मक या सृजनात्मक साहित्य :-**
इसके अंतर्गत आने वाली रचनाओं का लेखन हमारी जानी हुई बातों को इस तरह से कहता है की हमारे अन्दर पढने की ललक उत्पन्न होती है। इस प्रकार की रचनाओं को पढकर ऐसा लगता है की कही गई बाते हमारी अपनी हो। पात्र के सुख दुख हमारे अपने सुख दुख लगने लगते है। इस प्रकार के साहित्य का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति में मानवीय गुणों का विकास करना एवं उसमें सृजनात्मक क्षमता विकसित करना है। रचनात्मक साहित्य के अंतर्गत मुख्यतः उपन्यास, कविता, कहानी, रेखाचित्र आदि आते है।

साहित्य के इन रूपों की भाषा आम बोलचाल की भाषा से अलग एवं कलात्मक होती है क्योंकि उसमे विभिन्न प्रकार की साहित्यिक एवं सौंदर्यात्मक उपकरणों का निवेश किया जाता है।
जैसे — उपमा, रूपक, पर्यायवाची, अनुकरणात्मक शब्द आदि।

* **साहित्य का भाषा में योगदान :-**
भाषा वैज्ञानिक हमे शब्द देते है लेकिन साहित्यकार उन शब्दो को चुनकर एक रचना को जन्म देते है। भाषा वैज्ञानिक वाक्य संरचना का ज्ञान कराते है लेकिन

Scanned with CamScanner

साहित्यकार वाक्य का अर्थ सुरक्षित रखते हुए रचना में लालित्य (सुन्दरता) पैदा करते हैं। भाषा वैज्ञानिक लेखन में भाषा अनुशासन का पाठ पढ़ाते हैं लेकिन साहित्यकार किसी भी भाषाई अनुशासन से परे शब्दों के जोड़ तोड़ के जादू से पाठक के दिलों में समा जाते हैं।

भाषा और साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भाषा है तो साहित्य है और जब साहित्य होता है तब भाषा स्वतः ही विकासमान होती है।

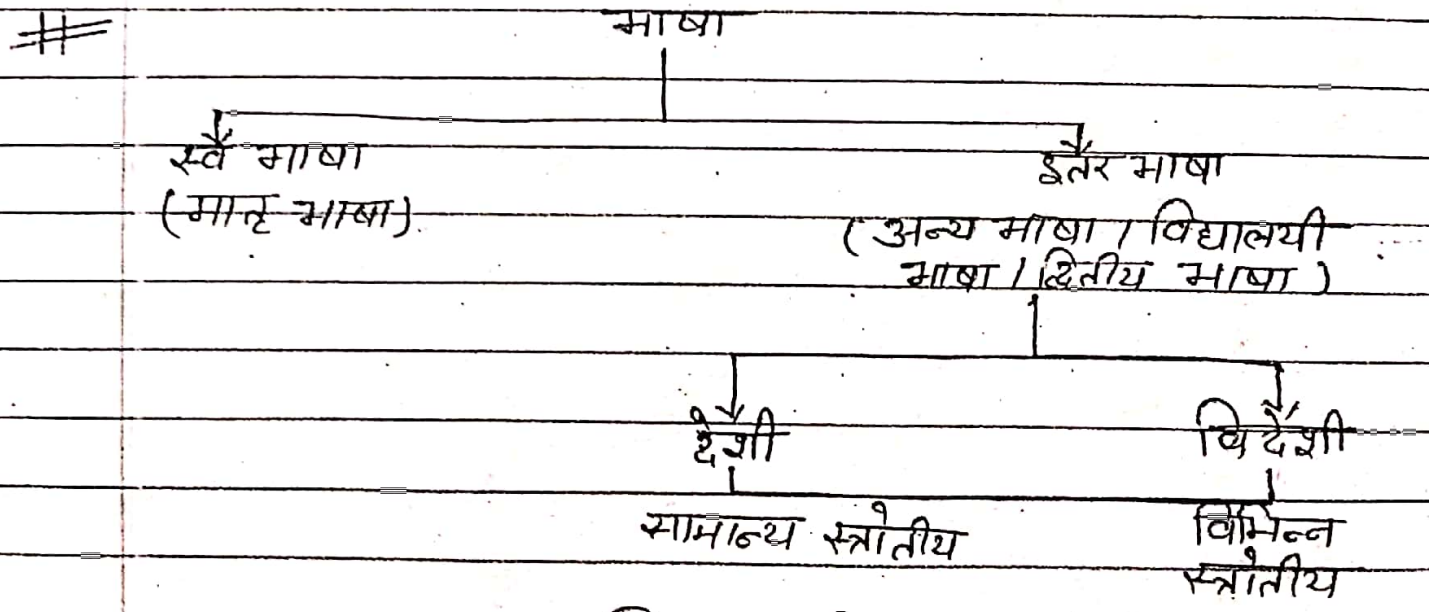

* मातृ भाषा का शाब्दिक अर्थ :-
माता के मुख से निकली वह भाषा जिसे शिशु भाषा अर्जन की प्रक्रिया में सबसे पहले अर्जित (सुनना और बोलना) करता है। प्रायः मातृ भाषा का रूप क्षेत्रीय बोली का रूप हुआ करता है। जैसे -

Scanned with CamScanner

पश्चिमी ब्रज भाषा भाषी क्षेत्र (आगरा, मथुरा, वृंदावन, अलीगढ़, एटा के आस पास के क्षेत्र) मे ब्रज बोली के क्षेत्रीय रूपो (घर की बोली या गॉव की बोली) का बोलचाल मे प्रयोग मिलता है। माताएँ ही नही परिवार के अन्य स्वजन भी क्षेत्रीय ब्रज बोली का प्रयोग करते है। ब्रज बोली के इस क्षेत्र के किसी हिन्दी विद्वान के घर पहुँचे हुए अतिथि का स्वागत प्राय: इन शब्दों मे होगा - नमस्कार! आइए पधारिये, कैसे कष्ट किये आदि। इसी स्वागत सत्कार की भाषा के बीच ये शब्द भी सुनाई पडेगे जो वे अपने नौकर या बच्चो से कर रहे होगे। अरे हुरकन नेक जल्दी ते दैव गिलास जल तो दै जइओ। इस प्रकार इस सज्जन की स्वभाषा या मातृ भाषा तो ब्रज बोली है किन्तु उनकी प्रथम भाषा हिन्दी है अत: यह कहा जा सकता है की समाज के शिष्ट जन जिस भाषा मे आपस मे विचार विनमय, लिखा - पढ़ी करते है वह भाषा शिक्षा दीक्षा की दृष्टि से प्रथम भाषा कही जाती है।